* ओ३म् *

सत्यार्थप्रकाश प्रश्नोत्तरी

मन्त्रद्रष्टा, युगपुरुष महर्षि दयानन्द द्वारा रचित सत्यार्थप्रकाश
के द्वितीय और तृतीय समुल्लास का
बालकोपयोगी संस्करण

रामबाबू आर्य

प्रकाशक :
आर्यसमाज, हिण्डौन सिटी (राज०)

तृतीय बार 3,000

23 दिसम्बर, 1993
श्रद्धानन्द बलिदान दिवस

मूल्य तीन रुपये

CamScanner से स्कैन किया गया

"ओ३म"

महर्षि दयानन्द सरस्वती ने सतत साधना, तप और अभ्यास द्वारा अठारह घण्टे की समाधि सिद्ध करली थी। वह चाहते तो इस परमान्दीय आनन्द में निमग्न रहते लेकिन उच्चतम मानवीय भावनाओं के रहते जनकल्याण हेतु वह कंटकाकीर्ण मार्ग के पथिक बने। संसार के इतिहास में ऐसे उदाहरण दुर्लभ हैं जब किसी ने बार-बार विषपान करने के पश्चात् भी विषदाता का भी कल्याण चाहा हो।

ऐसे करुणापुञ्ज द्वारा लिखित ग्रन्थ "सत्यार्थ प्रकाश" निश्चय ही मानव के कल्याण की कुंजी है। जहाँ इसमें करणीय का संकेत है वहीं वर्जनीय भी बताया गया है। मिश्री में लिपटी गन्दगी से अनभिज्ञ मानव से जब इसे छीनकर शुद्ध दूध दिया जाता है तो एकबारगी उसे बहुत अटपटा तथा बुरा लगता है लेकिन होता यह उसके कल्याण के लिए ही है। ऐसा ही कुछ इस ग्रन्थ के द्वारा हुआ लेकिन वर्तमान इस ओर इंगित करता है कि सत्यार्थ प्रकाश की स्थापना सत्य है। भविष्य इसे और स्पष्ट करेगा कि कल्याण का मार्ग यही है।

आर्य समाज हिण्डौन सिटी ने अपने कर्त्तव्य का पालन कर इसके अधिकाधिक प्रचार का कार्य उठाया है। बालक भी इससे लाभ उठा भविष्य में सचेत रह सकें इस हेतु यह बालकोपयोगी संस्करण तैयार किया गया है। इसकी परीक्षाओं द्वारा जहाँ स्वाध्याय की रुचि विकसित होगी वहीं सुसंस्कारों का निर्माण भी होगा।

इसके प्रकाशन में हमें श्री बाबूलाल जी हरिओमकुमार जी आर्य 301/- श्री शान्तिस्वरुप जी अशोक कुमार जी आर्य 201/- आर्यवस्त्र भण्डार 201/- श्री श्रीलालजी खानावाले 101/- श्री-ओमप्रकाश जी बंसल 101/- श्री कृष्णचन्द्र जी आर्य 101/- श्री-बसन्तलाल जी आर्य 101/- की राशि प्रदान की है। सबका हार्दिक आभार!

आर्य समाज हिण्डौन सिटी

CamScanner से स्कैन किया गया

आवश्यक जानकारियाँ

महर्षि दयानन्द का जन्म गुजरात प्रान्त में मोरवी राज्य के टंकारा ग्राम में फाल्गुन कृष्णा दसमी संवत् 1881 तदनुसार 12 फरवरी सन् 1825 को हुआ था। आपके बचपन का नाम मूलशंकर था। आपके पिताजी श्री कर्षण जी तिवारी कर्मकाण्डी औदीच्य ब्राह्मण थे। आपकी माता का नाम अमृतावेन था।

आपने समाज एवं राष्ट्र के उत्थान हेतु चैत्र शुक्ला पंचमी शनिवार संवत् 1932 तदनुसार 10 अप्रैल 1875 को सायंकाल 5-30 बजे बम्बई नगर के गिरगाँव मोहल्ले में डॉ० माणिकचन्द्र की वाटिका में आर्य समाज की स्थापना की।

सत्य का ग्रहण कराने एवं असत्य का परित्याग कराने के उद्देश्य से राजा जयकृष्णदास जी के आग्रह पर उदयपुर के नवलखा महल में आषाढ़ कृष्णा त्रयोदशी संवत् 1931 तदनुसार 12 जून 1874 शुक्रवार के दिन सत्यार्थ प्रकाश का कार्य प्रारम्भ किया। प्रेस से मुद्रित होकर सन् 1875 में सर्व प्रथम यह ग्रन्थ प्रकाशित हुआ। सन् 1882 में लिखित तथा 1884 में प्रकाशित सत्यार्थ प्रकाश का दूसरा संस्करण प्रमाणित माना जाता है।

सत्यार्थ प्रकाश वेद नहीं है पर वेदमार्ग पर अग्रसर होने में परम सहायक है। वैदिकसिद्धान्तों तथा महर्षि की मान्यताओं का यह विश्वकोश है।

अविद्या का नाश और विद्या की वृद्धि को आधार बनाकर समुचित शिक्षा प्रचार को भी आर्य समाज ने अपने उद्देश्यों में सम्मिलित किया है। देश विदेश में स्थापित और संचालित डी० ए० वी० स्कूलों, कॉलेजों तथा गुरुकुलों का योगदान शिक्षा क्षेत्र में आर्य समाज की गौरवपूर्ण तथ्यात्मक क्रान्ति है।

CamScanner से स्कैन किया गया

द्वितीय समुल्लास

प्रश्न–बालक के ज्ञानवान होने के लिये तीन उत्तम शिक्षकों का नाम बताइये ?

उत्तर–एक माता, दूसरा पिता और तीसरा आचार्य।

प्रश्न–सन्तानों को सबसे अधिक उपदेश और उपकार पहुँचता है (अ) माता से (ब) पिता से (स) आचार्य से (द) उपरोक्त सभी से

उत्तर (अ)

प्रश्न–माता-पिता को गर्भाधान के पूर्व, मध्य और पश्चात् त्याज्य और ग्राह्य पदार्थों के नाम लिखिये।

उत्तर–मादक द्रव्य, दुर्गन्धयुक्त, रूक्ष, बुद्धिनाशक पदार्थों का त्यागकर शान्ति, आरोग्य, बल, बुद्धि, पराक्रम और सुशीलता को प्राप्त कराने वाले दुग्ध, घृत, मिष्ठ, अन्नपान आदि श्रेष्ठ पदार्थों का सेवन करना जिससे रज्‌स व वीर्य दोषों से रहित होकर अत्युत्तम गुणयुक्त हो।

उत्तम सन्तान प्राप्त करने के लिये उसके उपादान रज-वीर्य का उत्तम कोटि का होना आवश्यक है।

प्रश्न–बालक के जन्म के समय होने वाले संस्कार का नाम है (अ) गर्भाधान (ब) जातकर्म (स) नामकरण (द) मुण्डन

उत्तर (ब)

प्रश्न–प्रेत, प्रेतहार एवं भूत की परिभाषा लिखिये।

उत्तर-जब गुरु का प्राणान्त हो तब मृतक शरीर का नाम प्रेत, उसका दाह करने वाले को प्रेताहार एवं मृतक दाह हो चुका तब उसका नाम भूत होता है। अर्थात् वह अमुक नामी पुरुष था। अर्थात् जो उत्पन्न तो हुआ परन्तु अब नहीं है (भूतस्थ होने से) भूत कहलाता है।

प्रश्न–प्राणी के मरने के बाद क्या होता है ?

उत्तर–जब कोई प्राणी मरता है तब उसका जीव पाप पुण्य के

CamScanner से स्कैन किया गया

वश होकर परमेश्वर की व्यवस्था के अनुसार सुख, दुःख के फल भोगने के लिये जन्मान्तर धारण करता है। यह परमेश्वर की व्यवस्था है इसका कोई नाश नहीं कर सकता।

प्रश्न–सूर्य्यादि ग्रह क्या हैं ?

उत्तर–जैसी यह पृथिवी जड़ है वैसे ही सूर्यादि लोक (ग्रह) हैं। ये ताप और प्रकाशादि से भिन्न कुछ भी नहीं कर सकते।

प्रश्न–क्या ज्योतिष शास्त्र झूंठा है ?

उत्तर–जो इसमें अंक, बीज, रेखागणित विद्या है वह सच्ची और फल की लीला है वह सब झूंठी है।

प्रश्न–वीर्य के संरक्षण एवं उसके लाभ बताइये ?

उत्तर–विषयों की कथा, विषयि लोगों का संग, विषयों का ध्यान, स्त्री का दर्शन, एकान्त सेवन, संभाषण और स्पर्श इनसे पृथक् रहकर वीर्य का संरक्षण किया जा सकता है। जिस शरीर में सुरक्षित वीर्य रहता है वह आरोग्य, बुद्धि, बल, पराक्रम युक्त होकर सुख की प्राप्ति करता है।

प्रश्न–आयु के हिसाब से बालक के शिक्षकों का वर्णन करिये।

उत्तर–जन्म से लेकर पांचवे वर्ष तक बालक को माता, 6 वर्ष से 8 वें वर्ष तक पिता शिक्षा करे और नवे वर्ष के आरम्भ में द्विज अपनी सन्तान का उपनयन कराके आचार्य कुल में अर्थात् जहाँ पूर्ण विद्वान् और विदुषी विद्या और शिक्षा देने वाली हों वहाँ लड़के और लड़कियों को भेज देना चाहिये।

प्रश्न–छल और कपट की परिभाषा लिखिये।

उत्तर–जो भीतर और तथा बाहर और, दूसरे को मोह में डाल और दूसरों की हानि पर भी ध्यान न देकर स्वप्रयोजन सिद्ध करना छल और कपट कहलाता है।

प्रश्न–कृतघ्नता किसे कहते हैं ?

उत्तर–किसी के किये हुए उपकार को न मानना।

CamScanner से स्कैन किया गया

तृतीय समुल्लास

प्रश्न- सन्तानों के उत्तम आभूषण क्या हैं ?

उत्तर- उत्तम विद्या, शिक्षा, गुण, कर्म और स्वभाव ।

प्रश्न- महर्षि दयानन्द कौन से नर नारी को धन्य मानते थे ।

उत्तर- जिसका मन विद्या के विलास में तत्पर रहता, सुन्दर शील स्वभावयुक्त, सत्यभाषणादि नियम पालन युक्त और जो अभिमान अपवित्रता से रहित, अन्य की मलिनता के नाशक, सत्योपदेश, विद्यादान से संसारी जनों के दुखों को दूर करने हारे वेदविहित कर्मों से दूसरों के उपकार करने में तत्पर नर-नारी को धन्य मानते थे ।

प्रश्न- शिक्षक के गुण क्या हैं ?

उत्तर- पूर्ण विद्यायुक्त धार्मिक विद्वान् हों वे ही पढ़ाने और शिक्षा देने योग्य हैं ।

प्रश्न- विद्या पढ़ने का स्थान कैसा हो ?

उत्तर- विद्या पढ़ने का स्थान एकान्त देश होना चाहिये । लड़के एवं लड़कियों की पाठशालाओं में कम से कम दो कोस की दूरी होनी चाहिए । कन्याओं की पाठशाला में अध्यापिका आदि सब स्त्री तथा लड़कों की पाठशालाओं में अध्यापक आदि सब पुरुष होने चाहिये । स्त्रियों की पाठशाला में पाँच वर्ष का लड़का व पुरुषों की पाठशालाओं में पाँच वर्ष की लड़की भी नहीं जानी चाहिये ।

प्रश्न- पाठशालाओं की नगर या ग्राम से कितनी दूरी होनी चाहिये ।

उत्तर- कम से कम चार कोस ।

प्रश्न- गायत्री मंत्र और इसका अर्थ संक्षेप में लिखो ?

उत्तर-ओ३म् भूर्भुवः स्वः । तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि धियो यो नः प्रचोदयात् ।

CamScanner से स्कैन किया गया

ओ३म् ईश्वर का मुख्य नाम है। जो सब जगत् के जीवन का आधार, प्राण से भी प्रिय और स्वयम्भू है उस प्राण का वाचक होके भू: परमेश्वर का नाम है। जो सब दु:खों से रहित, जिसके संग से जीव सब दु:खों से छूट जाते हैं इसलिए उस परमेश्वर का नाम भुव: है। जो नानाविध जगत् में व्यापक होके सबका धारण करता है इसलिये उस परमेश्वर का नाम स्व: है।

जो सब जगत् का उत्पादक और सब ऐश्वर्य का दाता है जो सर्व सुखों का देनेहारा और जिसकी प्राप्ति की सब कामना करते हैं उस परमात्मा का स्वीकार करने योग्य अति श्रेष्ठ शुद्ध स्वरूप और पवित्र करने वाला चेतन ब्रह्म स्वरूप है उसी परमात्मा के स्वरूप को हम धारण करें। जो हमारी बुद्धियों को प्रेरणा करे अर्थात् बुरे कामों से छुड़ाकर अच्छे कामों में प्रवृत्त करे।

प्रश्न–शरीर, मन, जीवात्मा तथा बुद्धि किससे पवित्र होती है?

उत्तर–जल से शरीर के बाहर के अवयव, सत्याचरण से मन, विद्या और तप (अर्थात् सब प्रकार के कष्ट भी सह कर धर्म ही के अनुष्ठान करने) से जीवात्मा और पृथिवी से लेकर परमेश्वर पर्यन्त पदार्थों के विवेक से बुद्धि दृढ़ निश्चय पवित्र होती है।

प्रश्न-प्राणायाम से क्या लाभ है? तथा यह कैसे किया जाता है?

उत्तर–जब मनुष्य प्राणायाम करता है तब प्रतिक्षण उत्तरोत्तर काल में अशुद्धि का नाश और ज्ञान का प्रकाश होता जाता है, जब तक मुक्ति नहीं होती तब तक उसके आत्मा का ज्ञान बराबर बढ़ता जाता है।

जैसे अग्नि में तपाने से सुवर्णादि धातुओं का मल नष्ट होकर शुद्ध होते हैं वैसे ही प्राणायाम करने से मन आदि इन्द्रियों के दोष क्षीण होकर निर्मल हो जाते हैं।

CamScanner से स्कैन किया गया

जैसे अत्यन्त वेग से वमन होकर अन्न जल बाहर निकल जाता है वैसे प्राण को बल से बाहर फेंक के बाहर ही यथाशक्ति रोक देवें। जब बाहर निकालना चाहें तब मूलेन्द्रिय को ऊपर खींच के वायु को बाहर फेंक दें। जब तक मूलेन्द्रिय को ऊपर खींच रक्खें तब तक प्राण बाहर रहता है। इस प्रकार प्राण बाहर अधिक ठहर सकता है। जब घबराहट हो तब धीरे-धीरे भीतर वायु को लेके फिर वैसे ही करते जायें जितनी सामर्थ्य और इच्छा हो। और मन में "ओ३म्" का जाप करते जायें। इस प्रकार करने से आत्मा और मन की पवित्रता और स्थिरता होती है। एक बाह्य विषय अर्थात् बाहर ही अधिक रोकना। दूसरा 'आभ्यान्तर' अर्थात् भीतर जितना प्राण रोका जाय उतना रोक के। तीसरा 'स्तम्भवृत्ति' अर्थात् एक ही बार जहाँ का तहाँ प्राण को यथाशक्ति रोक देना। चौथा 'बाह्याभ्यन्तराक्षेपी' अर्थात् जब प्राण भीतर से बाहर निकलने लगे तब उससे विरुद्ध उसको न निकलने देने के लिए बाहर से भीतर ले और जब बाहर से भीतर आने लगे तब भीतर से बाहर प्राण को धक्का देकर रोकते जायें। ऐसे एक दूसरे के विरुद्ध क्रिया करें तो दोनों की गति रुककर प्राण अपने वश में होने से मन और इन्द्रियाँ भी स्वाधीन होते हैं। बल पुरुषार्थ बढ़ कर बुद्धि तीव्र सूक्ष्म रूप हो जाती है। जो बहुत कठिन और सूक्ष्म विषय को भी शीघ्र ग्रहण करती है। इससे मनुष्य शरीर में वीर्य वृद्धि को प्राप्त होकर स्थिर बल, पराक्रम, जितेन्द्रियता सब शास्त्रों को थोड़े ही काल में समझ कर उपस्थित कर लेगा। स्त्री भी इसी प्रकार योगाभ्यास करे।

प्रश्न–पंच महायज्ञों के क्रमशः नाम लिखिये तथा संक्षेप में ब्रह्मयज्ञ एवं देवयज्ञ का वर्णन कीजिये।

उत्तर–(1) ब्रह्मयज्ञ (2) देवयज्ञ (अग्निहोत्र) (3) पितृयज्ञ (4) बलिवैश्वदेवयज्ञ और (5) अतिथियज्ञ।

CamScanner से स्कैन किया गया

ब्रह्मयज्ञ – सन्ध्योपासना एवं स्वाध्याय को ब्रह्मयज्ञ कहते हैं। संध्योपासना का समय प्रातः सूर्योदय से पूर्व एवं सायं (सूर्यास्त के समय) है। संध्योपासना में सर्व प्रथम आचमन (उतना जल हथेली में लेकर जितना जल कण्ठ के नीचे हृदय तक पहुँचे, उससे अधिक ना उससे कम) मूल और मध्यदेश में ओष्ठ लगाकर करना पश्चात् मार्जन अर्थात् मध्यमा और अनामिका अंगुली के अग्रभाग से नेत्रादि अंगों पर जल छिड़कना जिससे आलस्य दूर हो जावे। पुनः समन्त्रक प्राणायाम, मन्सापरिक्रमण, उपस्थान एवं परमेश्वर की स्तुति, प्रार्थना और उपासना करना। पश्चात् 'अघमर्षण' अर्थात् पाप करने की इच्छा न करना। यह सन्ध्योपासना एकान्त देश में एकाग्रचित्त से करना। वेदादि अनुकूल साहित्य का अध्ययन करना।

देवयज्ञ—यह अग्निहोत्र और विद्वानों का संग सेवादि कहाता है। सूर्योदय के पश्चात् एवं सूर्यास्त से पूर्व अग्निहोत्र करने का समय है। प्रत्येक मनुष्य को सोलह-सोलह आहुति और प्रत्येक आहुति में छह मासे घी कम से कम लेना चाहिये।

प्रश्न-देवयज्ञ (हवन) से क्या उपकार होता है?

उत्तर-दुर्गन्धयुक्त वायु एवं जल से रोग तथा रोग से प्राणियों को दुःख पहुँचता है और सुगन्धित वायु तथा जल से आरोग्य और रोग के नष्ट होने से सुख प्राप्त होता है और यह सुगन्धि हवन से मिलती है।

प्रश्न—चन्दनादि को घिसकर लगाने से या घृतादि को खाने से जो लाभ होगा क्या इन्हें अग्नि में डालकर नष्ट करना बुद्धिमानी का काम है?

उत्तर—पदार्थ विद्या के अनुसार किसी द्रव्य का नाश नहीं होता, अग्नि में डाला हुआ सुगन्धित पदार्थ सूक्ष्म होकर, फैलकर वायु के द्वारा दूर-दूर जाकर दुर्गन्धि को नष्ट करता हुआ सुगन्धि देता है।

CamScanner से स्कैन किया गया

प्रश्न–क्या केशर, कस्तूरी, सुगन्धित पुष्प और इत्र आदि के घर में रखने से वायु सुगन्धित होकर सुखकारक नहीं होगी ?

उत्तर–उस सुगन्ध का वह सामर्थ्य नहीं कि गृहस्थ वायु को निकालकर शुद्ध वायु को प्रवेश करा सके क्योंकि उसमें भेदक शक्ति नहीं है और यह अग्नि की ही सामर्थ्य है कि उस वायु और दुर्गन्धयुक्त पदार्थों को छिन्न भिन्न और हल्का करके बाहर निकाल कर पवित्र वायु को प्रवेश करा देता है।

प्रश्न–हवन करते समय मन्त्र पढ़ने का क्या प्रयोजन है ?

उत्तर–मन्त्रों में वह व्याख्यान है कि जिससे हवन करने के लाभ विदित हो जायें और मन्त्रों की आवृत्ति होने से कण्ठस्थ रहें इस प्रकार वेदों का पठन-पाठन और रक्षा भी होती है।

प्रश्न–क्या हवन नहीं करने से पाप होता है ?

उत्तर–हाँ ! जिस मनुष्य के शरीर से जितना दुर्गन्ध उत्पन्न हो के वायु और जल को बिगाड़ कर रोगोत्पत्ति का निमित्त होने से प्राणियों को दुःख पहुँचता है उतना ही पाप उस मनुष्य को होता है। अतः उस पाप के निवारणार्थ उतना या इससे अधिक सुगन्ध वायु और जल में फैलाना चाहिये। जितना घृत और सुगन्धादि पदार्थ एक मनुष्य खाता है उतने द्रव्य के होम स लाखों मनुष्यों का उपकार होता है।

प्रश्न–तो क्या घृतादि सुगन्धित पदार्थों को केवल होम में ही डाल देना चाहिए, खाना नहीं चाहिये ?

उत्तर–जो मनुष्य लोग घृतादि उत्तम पदार्थ न खायें तो उनके शरीर और आत्मा के बल की उन्नति न हो सके, इससे अच्छे पदार्थ खिलाना, पिलाना भी चाहिये परन्तु होम करना भी उचित है अतः होम अवश्य करना चाहिये।

CamScanner से स्कैन किया गया

प्रश्न–ब्रह्मचर्य कितने प्रकार का होता है? उनकी आयु लिखो ?

उत्तर–ब्रह्मचर्य तीन प्रकार का होता है।

प्रथम कनिष्ठ :-इसकी आयु 24 वर्ष है। मनुष्य को 24 वर्ष पर्यन्त ब्रह्मचारी रहकर वेदादि विद्या और सुशिक्षा का ग्रहण करना चाहिए। तब उसके शरीर में प्राण बलवान होकर सब शुभ गुणों के वास करने वाले होते हैं। ब्रह्मचारी की इस प्रथम अवस्था में ठीक प्रकार से ब्रह्मचर्य के पालन करने से उसके शरीर व आत्मा आरोग्य बलवान होकर शुभ गुणों को धारण करने वाले होंगे।

द्वितीय मध्यम :- इसकी आयु 44 वर्ष है। जो इस आयु तक ब्रह्मचारी रहकर वेदाभ्यास करता है उसके प्राण, इन्द्रियाँ, अन्तः करण और आत्मा बलयुक्त होते हैं। वह श्रेष्ठों का पालन करता हुआ दुष्टों को दण्ड देने में समर्थ होता है।

तृतीय उत्तम :- इसकी आयु 48 वर्ष है। जो 48 वर्ष तक यथावत् ब्रह्मचर्य पालन करता है उसके प्राण अनुकूल होकर सकल विद्याओं को ग्रहण करने वाले होते हैं। इस अखण्ड उत्तम ब्रह्मचर्य का पालन करने वाले की आयु 400 (चार सौ) वर्ष तक हो सकती है। क्योंकि जो मनुष्य इस ब्रह्मचर्य को प्राप्त करके इसे लोप नहीं करते वे सब प्रकार के रोगों से रहित होकर धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष को प्राप्त होते हैं।

प्रश्न–शरीर की चार अवस्थाएँ कौन-सी हैं, संक्षिप्त विवरण लिखो ?

उत्तर–एक 'वृद्धि' जो 16 वें वर्ष से लेकर 25 वें वर्ष पर्यन्त सब धातुओं की बढ़ती होती है। दूसरी 'यौवन' जो 25 वें वर्ष के

CamScanner से स्कैन किया गया

अन्त और 26 वें वर्ष के प्रारम्भ में युवावस्था की आरम्भ अवस्था होती है। तीसरी 'सम्पूर्णता' जो पच्चीसवें वर्ष से लेकर चालीसवें वर्ष पर्यन्त सब धातुओं की पुष्टी होती है। चौथी 'किञ्चित परि-हाणि' जब सब साङ्गोपांग शरीरस्थ सकल धातु पुष्ट होके पूर्णता को प्राप्त होते हैं तदन्तर जो धातु बढ़ता है वह शरीर में नहीं रहता किन्तु स्वप्न, प्रस्वेदादि द्वारा बाहर निकल जाता है। वही 40 वाँ वर्ष उत्तम समय विवाह का है अर्थात् उत्तमोत्तम तो अड़-तालीसवें वर्ष में विवाह करना।

प्रश्न-क्या यह ब्रह्मचर्य का नियम स्त्री व पुरुष दोनों को समान ही हैं?

उत्तर–नहीं, जो 25 वर्ष पुरुष ब्रह्मचर्य करे तो 16 वर्ष पर्यन्त कन्या, जो पुरुष तीस वर्ष पर्यन्त ब्रह्मचारी रहे तो स्त्री 17 वर्ष, जो पुरुष छत्तीस वर्ष तक रहे तो स्त्री 18 वर्ष, जो पुरुष 40 वर्ष पर्यन्त ब्रह्मचर्य करे तो स्त्री 20 वर्ष, जो पुरुष44 वर्ष तक ब्रह्मचर्य करे तो स्त्री 22 वर्ष और जो पुरुष 48 वर्ष तक ब्रह्मचर्य करे तो स्त्री 24 वर्ष पर्यन्त ब्रह्मचर्य सेवन रक्खे। अर्थात् 48 वर्ष से आगे पुरुष और 24 वर्ष से आगे स्त्री को ब्रह्मचर्य नहीं रखना चाहिये। यह नियम विवाह करने वाले स्त्री और पुरुषों के लिये है। पूर्ण विद्या वाले जितेन्द्रिय और निर्दोष योगी स्त्री और पुरुष ही इससे आगे ब्रह्मचर्य का पालन कर सकते हैं और तभी उनको विवाह न करना उत्तम है नहीं तो विवाह कर लेना उत्तम है।

प्रश्न-यम कितने हैं स्पष्ट करो?

उत्तर-अहिंसा अर्थात् वैर त्याग, सत्य अर्थात् सत्य मानना, सत्य बोलना और सत्य ही कहना, अस्तेय अर्थात् मन वचन कर्म से चोरी त्याग, ब्रह्मचर्य अर्थात् उपस्थेन्द्रिय का संयम एवं अपरिग्रह अर्थात् अत्यन्त लोलुपता स्वत्वाभिमान रहित होना ये पाँच यम कहलाते हैं।

CamScanner से स्कैन किया गया

प्रश्न–नियम कितने हैं स्पष्ट करो?

उत्तर–शौच अर्थात् स्नानादि से पवित्रता, सन्तोष अर्थात् सम्यक् प्रसन्न होकर निरुद्यम रहना सन्तोष नहीं अपितु पुरुषार्थ जितना हो सके उतना करना, हानि लाभ में हर्ष शोक ना करना, तप अर्थात् कष्ट सेवन से भी धर्मयुक्त कर्मों का अनुष्ठान, स्वाध्याय अर्थात् वेदादि अनुकूल सत्य साहित्य का पठन पाठन और ईश्वर प्राणिधान अर्थात् ईश्वर की भक्ति विशेष में आत्मा को अर्पित रखना, ये पाँच नियम कहलाते हैं।

यमों के बिना नियमों का पालन नहीं होता। जो यमों को छोड़कर केवल नियमों का पालन करता है वह उन्नति को प्राप्त नहीं होता।

प्रश्न–जैसे विद्वान् सारथी घोड़ों को नियम में रखता है वैसे मन और आत्मा को खोटे कर्मों में खेंचने वाले विषयों से दूर रखने के प्रयत्न को कहते हैं?

(अ) ब्रह्मचर्य (ब) अस्तेय (स) शौच (द) इन्द्रिय निग्रह

उत्तर– (द)

प्रश्न–अभिवादन के लाभ लिखिये?

उत्तर–जो सदा नम्र और सुशील, विद्वान् और वृद्धों की सेवा करता है उसकी आयु, विद्या, कीर्ति और बल ये चार सदा बढ़ते हैं।

प्रश्न–वेदों के सिद्धान्त रूप फल को कौन प्राप्त होता है?

उत्तर–जिस मनुष्य के वाणी और मन सदा शुद्ध और सुरक्षित रहते हैं।

प्रश्न–समग्र वेद और परमेश्वर को कौन जान सकता है?

उत्तर–वही ब्राह्मण समग्र वेद और परमेश्वर को जानता है जो

CamScanner से स्कैन किया गया

प्रतिष्ठा से विषतुल्य सदा डरता है और अपमान की इच्छा अमृत के समान किया करता है।

प्रश्न–ब्रह्मचारी एवं ब्रह्मचारिणियों के लिये क्या आवश्यक है ?

उत्तर–(1) मद्य, मांस, गन्ध, माला, रस, स्त्री और पुरुष का संग, सब खटाई एवं प्राणियों की हिंसा का त्याग (2) अङ्गों का मर्दन, बिना निमित्त उपस्थेन्द्रिय का स्पर्श, आँखों में अञ्जन, जूते और छत्रधारण, काम, क्रोध, लोभ, मोह, भय, शोक, ईर्ष्या, द्वेष और नाच, गाना, बजाना आदि का त्याग (3) द्यूत (जुआ), जिस किसी की कथा, निन्दा, मिथ्याभाषण, स्त्रियों का दर्शन, आश्रय दूसरे की हानि आदि कुकर्मों का सदा त्याग करना (4) सर्वत्र एकाकी सोना एवं वीर्य स्खलित कभी न करना।

प्रश्न–धर्माधर्म का निश्चय कैसे होता है ?

उत्तर–श्रुति=वेद, स्मृति=वेदानुकूल आप्तोक्त मनुस्मृत्यादि शास्त्र, सत्पुरुषों का आचार जो सनातन अर्थात् वेद द्वारा परमेश्वर प्रतिपादित कर्म और अपने आत्मा में प्रिय अर्थात् जिसको आत्मा चाहता है जैसा कि सत्य भाषण इन्हीं से धर्माऽधर्म का निश्चय होता है।

प्रश्न–धर्म का ज्ञान किन्हें प्राप्त होता है ?

उत्तर–जो पुरुष (अर्थ) सुवर्णादि रत्न और (काम) स्त्री सेवनादि में नहीं फंसते हैं उन्हीं को धर्म का ज्ञान प्राप्त होता है, जो धर्म के ज्ञान की इच्छा करें वे वेद द्वारा धर्म का निश्चिय करें क्योंकि धर्माऽधर्म का निश्चय बिना वेद के ठीक नहीं होता।

प्रश्न–क्या विद्या का अभ्यास सभी वर्णों के लिये आवश्यक है ?

CamScanner से स्कैन किया गया

उत्तर–हाँ सभी वर्णों के स्त्री और पुरुषों में विद्या और धर्म का प्रचार होना आवश्यक है। जब सब वर्णों में विद्या और सुशिक्षा होती है तब कोई भी पाखण्डरूप अधर्म मिथ्या व्यवहार को नहीं चला सकता तथा विद्या, धर्म, राज्य एवं धनादि की वृद्धि होती है।

प्रश्न–सत्य और असत्य क्या है ?

उत्तर–आत्मा में सत्य और असत्य का विवेक करने की शक्ति है किन्तु हठ, दुराग्रह और अविधादि, दोषों के कारण वह सत्य को छोड़कर असत्य की ओर झुक जाता है। सत्य और असत्य को पाँच प्रकार की कसौटियों से परखा जाता है—

(1) जो जो ईश्वर के गुण, धर्म, कर्म, स्वभाव और वेदों के अनुकूल हों वह सत्य और इससे विरुद्ध हो वह असत्य।

(2) जो जो सृष्टिक्रम के अनुकूल वह वह सत्य और जो जो सृष्टिक्रम के विरुद्ध है वह असत्य है।

(3) 'आप्त' अर्थात् जो धार्मिक विद्वान्, सत्यवादी, निष्कप-टियों का संग उपदेश के अनुकूल है वह ग्राह्य और जो जो विरुद्ध वह वह अग्राह्य है।

(4) अपने आत्मा की पवित्रता, विद्या के अनुकूल अर्थात् जैसा अपने को सुख, प्रिय एवं दुःख अप्रिय है वैसे ही सर्वत्र समझ लेना।

(5) आठों प्रमाणों अर्थात् प्रत्यक्ष, अनुमान, उपमान, शब्द-ऐतिह्य, अर्थापत्ति, सम्भव और अभाव इनसे परीक्षा करना।

(1) प्रत्यक्षः– जो श्रोत, त्वचा, चक्षु, जिह्वा और घ्राण, शब्द, स्पर्श, रूप, रस, और गंध के साथ अव्यवहरित अर्थात् आवरणरहित सम्बन्ध होता है, इन्द्रियों के साथ मन का और मन के साथ आत्मा के संयोग से ज्ञान उत्पन्न होता है उसको 'प्रत्यक्ष' कहते हैं।

(2) अनुमान :– जो प्रत्यक्ष के पश्चात् उत्पन्न हो। अर्थात्

CamScanner से स्कैन किया गया

जिसका कोई भाग या सम्पूर्ण भाग किसी एक स्थान या काल में प्रत्यक्ष हुआ हो उसका किसी अन्य स्थान में प्रथम स्थान के प्रत्यक्ष होने से सहचारी के कारण जो अदृश्य अवयवी का ज्ञान होता है उसे अनुमान कहते हैं जैसे पुत्र को देख कर पिता का, धुँआ को देख कर अग्नि का, जगत् में सुख दुःख देखकर पूर्व जन्म का। यह तीन प्रकार का होता है।

(अ) पूर्ववत् :- जहाँ जहाँ कारण को देखकर कार्य का ज्ञान हो जैसे बादलों को देखकर वर्षा का, विवाह को देखकर सन्तानोत्पत्ति का, पढते हुए विद्यार्थी को देखकर ज्ञान का अनुमान होता है।

(ब) शेषवत् :- जहाँ कार्य को देखकर कारण का ज्ञान होता हो जैसे- नदी के प्रवाह को बढता हुआ देखकर वर्षा का, पुत्र को देखकर पिता का, सृष्टि को देखकर अनादि कारण का तथा ईश्वर का, और सुख दुःख को देखकर पाप पुण्य के आचरण का ज्ञान होता है।

(स) समान्यतोदृष्ट :- जो कोई किसी का कार्य कारण न हो परन्तु किसी प्रकार का साधर्म्य एक दूसरे के साथ हो, जैसे कोई बिना चले दूसरे स्थान को नहीं जा सकता वैसे ही दूसरों का भी स्थानान्तरण में जाना बिना गमन के कभी नहीं हो सकता।

(3) उपमान :- जिसके समान किसी का कथन किया जाए वह उपमान होता है और जिसके विषय में कथन किया जाए वह उपमेय कहलाता है। जैसे किसी ने किसी से कहा कि जैसी वह गाय है वैसी ही यह दूसरी गाय है।

(4) शब्द :- जो आप्त अर्थात् पूर्ण विद्वान्, धर्मात्मा, परोपकार प्रिय, सत्यवादी, पुरुषार्थी, जितेन्द्रिय पुरुष जैसा अपने आत्मा में जानता हो और जिस कथन से सुख प्राप्त हो उसी के कथन की इच्छा से प्रेरित सब मनुष्यों के कल्याणार्थ उपदेष्टा हो अर्थात् जितने पृथिवी से लेकर परमेश्वर पर्यन्त पदार्थों का ज्ञान प्राप्त

CamScanner से स्कैन किया गया

होकर उपदेष्टा होता है। जो ऐसे पुरुष और पूर्ण आप्त परमेश्वर के उपदेश वेद हैं और यही शब्द प्रमाण हैं।

(5) ऐतिह्य :– अर्थात् इस प्रकार का था, उसने इस प्रकार का किया।

(6) अर्थापत्ति :– जैसे कारण के होने से कार्य उत्पन्न होता है वैसे बिना कारण के कार्य नहीं हो सकता जैसे बिना बादल वर्षा।

(7) सम्भव :– जो बात सृष्टि कर्म के अनुकूल हो वही सम्भव है बाकी असम्भव। जैसे माता-पिता के बिना सन्तानोत्पत्ति, किसी ने मृतक जिलाये, पहाड़ उठाये, समुद्र में पत्थर तैराये, चन्द्रमा के टुकड़े किये, परमेश्वर का अवतार हुआ, मनुष्य के सींग देखे और बन्ध्या ने पुत्र और पुत्री का विवाह किया आदि।

(8) अभाव :– जहाँ जो वस्तु नहीं वह उसका अभाव कहलाती है।

प्रश्न–निःश्रेयस (मोक्ष) किसे कहते हैं ?

उत्तर–द्रव्य, गुण, कर्म, सामान्य, विशेष, और समवाय इन छह पदार्थों की साधारण एवं असाधारण विशेषताओं को जान लेने से इनके यथार्थ स्वरूप का ज्ञान हो जाता है। इन पदार्थों में कौन विशेषता किनमें समान रूप से पायी जाती है तथा किनमें इनका वैपरीत्य रहता है इनको यथार्थ में जान लेना द्रव्यादि विषयक तत्व ज्ञान है।

भौतिक पदार्थों की नश्वरता का साक्षात् हो जाने पर कि हम इनके लिये नहीं, हमें इनका दास नहीं होना चाहिए अपितु हमें महान् उद्देश्य व लक्ष्य की प्राप्ति के लिये इन्हें अपना सहायक समझ उसी सीमा तक इनका उपयोग करना चाहिये। इस प्रकार के बोध हो जाने से आध्यात्म मार्ग प्रशस्त हो जाता है। इसी तत्वज्ञान से निःश्रेयस की सिद्धि होती है।

प्रश्न–नौ द्रव्यों के नाम लिखिये ?

CamScanner से स्कैन किया गया

उत्तर-पृथिवी, जल, तेज, वायु, आकाश, काल, दिशा, आत्मा (जीवात्मा व परमात्मा) और मन ये नौ द्रव्य हैं।

प्रश्न–द्रव्य किसे कहते हैं?

उत्तर– क्रिया और गुणों का जो अधिकरण- आश्रय है वह द्रव्य है। कर्म अर्थात् क्रिया किसी द्रव्य में हो सकती है, जहाँ क्रिया देखी जावे समझ लो वहाँ द्रव्य है। किसी जगह क्रिया का होना उसके द्रव्य होने का चिह्न है। पृथ्वी, जल, तेज, वायु, मन, और आत्मा ये छह द्रव्य क्रिया और गुण वाले हैं।

प्रत्येक गुण किसी ना किसी द्रव्य में रहता है। जहाँ कहीं गुण होगा तो उसका आश्रय पदार्थ द्रव्य अवश्य होगा। आकाश, काल तथा दिशा क्रिया रहित गुण वाले द्रव्य हैं।

प्रश्न–लक्षण किसे कहते हैं?

उत्तर–जिसे लक्ष्य जाना जाय जैसे आँख से रूप जाना जाता है उसको लक्षण कहते हैं।

प्रश्न–पृथिवी के क्या क्या गुण हैं?

उत्तर–रूप, रस, गन्ध और स्पर्श पृथिवी के गुण हैं। इसमें पृथिवी में गन्ध उसका स्वाभाविक गुण है। रूप, रस और स्पर्श उसमें अग्नि, जल और वायु के योग से है।

प्रश्न–जल, अग्नि, वायु और आकाश के स्वाभाविक गुण क्या हैं?

उत्तर–जल में रस, अग्नि में रूप, वायु में स्पर्श और आकाश में शब्द उसका स्वाभाविक गुण है।

प्रश्न–जल के क्या गुण हैं?

उत्तर-रूप, रस और स्पर्शवान् द्रवीभूत कोमल जल कहलाता है। परन्तु इनमें जल का रस स्वाभाविक गुण तथा रूप और स्पर्श उसमें अग्नि और वायु के योग से है। जल में शीतलत्व भी उसका स्वाभाविक गुण है।

CamScanner से स्कैन किया गया

प्रश्न-तेज के क्या गुण हैं ?

उत्तर-जो रूप और स्पर्शवाला है वह तेज है। परन्तु रूप इसमें उसका स्वाभाविक गुण है तथा स्पर्श इसमें वायु के योग से है।

प्रश्न-वायु के क्या गुण हैं ?

उत्तर-स्पर्श गुण वाला वायु है। परन्तु इसमें उष्णता, शीतलता क्रमश: तेज और जल के योग से रहते हैं।

प्रश्न-आकाश के क्या गुण हैं ?

उत्तर-रूप, रस, गन्ध और स्पर्श आकाश में नहीं हैं। शब्द ही आकाश का गुण है।

प्रश्न-आकाश का लिङ्ग क्या है ?

उत्तर-जिसमें से प्रवेश और निकलने की क्रिया सम्भव हो वह आकाश का लिङ्ग (चिन्ह) है।

प्रश्न-काल किसे कहते हैं ?

उत्तर-जिसमें अपर, पर, एकबार, विलम्ब, शीघ्र इत्यादि प्रयोग होते हैं उसको काल कहते हैं। जो नित्य पदार्थों में न हो और अनित्यों में हो इसलिये कारण में ही काल संज्ञा है।

प्रश्न-दिशा किसे कहते हैं ?

उत्तर-यहाँ से यह पूर्व, दक्षिण, पश्चिम, उत्तर, ऊपर, नीचे जिसमें यह व्यवहार होता है उसी को दिशा कहते हैं।

प्रश्न-दिशायें कितनी हैं ? वर्णन करो।

उत्तर-जिस ओर प्रथम आदित्य (सूर्य) का संयोग हुआ है और होगा उसे पूर्व दिशा कहते हैं और जहाँ सूर्य अस्त हो उसे

CamScanner से स्कैन किया गया

पश्चिम कहते हैं। पूर्वाभिमुख मनुष्य के दाहिनी ओर दक्षिण तथा बायीं ओर उत्तर दिशा कहाती है। सिर से ऊँचाई की ओर ऊपर तथा तल की ओर नीचे की दिशा कहाती है।

पूर्व और दक्षिण के बीच की दिशा को आग्नेयी, दक्षिण-पश्चिम के बीच की नैऋति, पश्चिम-उत्तर के बीच की वायवी और उत्तर व पूर्व के बीच की ऐशानी दिशा कहते हैं।

प्रश्न–जीवात्मा क्या है ?

उत्तर–जिसमें (इच्छा) राग (द्वेष) वैर, (प्रयत्न) पुरुषार्थ, सुख, दुःख (ज्ञान) जानना आदि गुण हों वह जीवात्मा कहलाता है।

प्रश्न–आत्मा के गुण और कर्म क्या हैं ?

उत्तर–भीतर से वायु को निकालना (प्राण), वायु को बाहर से भीतर लेना [अपान], आँखों की पलकों को नीचे झपकाना [निमेष] और खोलना [उन्मेष], प्राण धारण करना, मनन, विचार अर्थात् ज्ञान, यथेष्ट गमन, इन्द्रियों को विषय में चलाना अर्थात् उनसे विषयों का ग्रहण करना, क्षुधा, तृषा, ज्वर, पीड़ा आदि विकारों का होना, सुख-दुःख, इच्छा, द्वेष और प्रयत्न ये सब आत्मा के कर्म तथा गुण हैं।

प्रश्न–मन किसे कहते हैं ?

उत्तर–जिसमें एक काल में दो पदार्थों का ग्रहण [ज्ञान] नहीं होता उसको मन कहते हैं।

प्रश्न–गुण किसे कहते हैं तथा ये कितने प्रकार के हैं, स्पष्ट करो ?

उत्तर–जो द्रव्य के आश्रय रहें, अन्य गुण का धारण न करें, संयोग और विभाग [विभक्त होते समय] कारण न हो, अनपेक्ष

CamScanner से स्कैन किया गया

अर्थात् एक दूसरे की अपेक्षा न करे उसका नाम गुण है। द्रव्य और कर्म के अतिरिक्त जो पदार्थ सत्ता सामान्य का आश्रय हो वह गुण है।

रूप, रस, गंध, स्पर्श, संख्या, परिमाण, पृथकत्व, संयोग, विभाग, परत्व, अपरत्व, बुद्धि, सुख, दु:ख, इच्छा, द्वेष, प्रयत्न, गुरुत्व, द्रवत्व, स्नेह, संस्कार, धर्म, अधर्म और शब्द ये 24 गुण हैं।

जिसको कानों से सुना जाता हो, बुद्धि से ग्रहण किया जाता हो और जिसे प्रयोग करने से अनुभव किया जाता है तथा जिसका स्थान आकाश है वह शब्द कहाता है।

नेत्र से जिसका ग्रहण हो वह रूप, जिह्वा से ग्रहण हो वह रस, नासिका से ग्रहण हो वह गन्ध, त्वचा से जिसका ग्रहण हो वह स्पर्श, एक दो इत्यादि गणना जिससे होती हो वह संख्या, जिससे तोल अर्थात् हल्का-भारी विदित हो वह परिमाण, एक दूसरे से अलग होना पृथकत्व, एक दूसरे के साथ मिलना संयोग, एक दूसरे से मिले हुए के अनेक टुकड़े होना विभाग, इससे यह परे हैं पर उससे यह उरे है वह अपर जिससे अच्छे, बुरे का ज्ञान होता है वह बुद्धि, आनन्द का नाम सुख, क्लेश का नाम दु:ख, इच्छा, (राग) द्वेष (वैर या विरोध, प्रयत्न (अनेक प्रकार का बल पुरुषार्थ) गुरुत्व (भारीपन) द्रवत्व (पिघल जाना) स्नेह (प्रीति और चिकनापन) संस्कार (दूसरे के योग से वासना का होना) धर्म (न्यायाचरण और कठिनत्वादि) अधर्म (अन्यायाचरण और कठिनता से विरुद्ध) ये 24 गुण हैं।

प्रश्न–कर्म किसे कहते हैं ?

उत्तर–'उत्क्षेपण' अर्थात् ऊपर को चेष्टा करना, 'अपक्षेपण' अर्थात् नीचे को चेष्टा करना, 'आकुञ्चन' अर्थात् संकोच करना,

CamScanner से स्कैन किया गया

'प्रसारण' अर्थात् फैलाना गमन, आना, जाना, घूमना, आदि इनको कर्म कहते हैं।

एक द्रव्य के आश्रित गुणों से रहित संयोग और बिभाग होने में जो अपेक्षारहित कारण हो उसे कर्म कहते हैं। कर्म कभी गुण का आश्रय नहीं होता।

प्रश्न–सामान्य और विशेष को स्पष्ट करो ?

उत्तर–सामान्य और विशेष बुद्धि की अपेक्षा से सिद्ध होते हैं। जैसे मनुष्य व्यक्तियों में मनुष्यत्व सामान्य और पशुत्यादि विशेष कहलायेगा। इसी प्रकार स्त्रीत्व और पुरुषत्व में ब्राह्मणत्व क्षत्रियत्व, वैश्यत्व, शूद्रत्व भी विशेष कहलायेंगे। ब्राह्मण व्यक्तियों में ब्रह्मणत्व सामान्य और क्षत्रियत्व, वैश्यत्व आदि विशेष कहलायेगा।

प्रश्न–समवाय और अनित्य सम्बन्ध क्या है ?

उत्तर–क्रिया-क्रियावान्, गुण-गुणी, जाति, व्यक्ति, कार्य-कारण अवयव-अवयवी, इनका नित्य सम्बन्ध होने से समवाय कहलाता है। अर्थात् जिससे कार्य-कारण में यह है ऐसा ज्ञात हो, वह समवाय कहलाता है। समवाय सम्बन्ध नित्य सम्बन्ध माना जाता है।

जब कोई द्रव्य किसी द्रव्य को उत्पन्न करेगा तो वह सजातीय द्रव्य को ही उत्पन्न करेगा। इसी प्रकार जब कोई कारणगत गुण कार्य द्रव्य में किसी गुण को उत्पन्न करता है तो वह सजातीय गुण को उत्पन्न करता है, विजातीय को नहीं। रूप रूप को उत्पन्न करेगा रस को नहीं।

जो दूसरे द्रव्यों का परस्पर सम्बन्ध होता है वह संयोग अर्थात् अनित्य सम्बन्ध है।

CamScanner से स्कैन किया गया

जो द्रव्य और गुण का विरुद्ध धर्म और कार्य का आरम्भ है उसको वैधर्म्य कहते हैं। जैसे पृथिवी में कठिनत्व, शुष्कत्व और गन्धत्व धर्म जल से विरुद्ध और जल का द्रव्यत्व, कोमलता और रस गुणयुक्तता पृथिवी से विरुद्ध हैं।

प्रश्न–कार्य-कारण में क्या सम्बन्ध है?

उत्तर–(1) कारण के होने से ही कार्य होता है।

(2) कार्य के अभाव से कारण का अभाव नहीं होता।

(3) कारण के न होने से कार्य कभी नहीं होता।

(4) जैसे कारण में गुण होते हैं वैसे ही कार्य में होते हैं।

प्रत्येक कार्य के अनेक कारण होते हैं। कोई समवायि, कोई असमवायि तथा कोई निमित्त कारण।

प्रश्न–परिमाण कितने प्रकार के होते हैं?

उत्तर–दो प्रकार के (1) सूक्ष्म (2) महत्-बड़ा। जैसे पहाड़ पृथिवी से छोटे तथा वृक्षों से बड़े होते हैं।

प्रश्न–सत्ता को कौन प्रदर्शित करता है?

उत्तर–जो द्रव्य, गुण और कर्मों में 'सत्' शब्द अन्वित रहता है वह सत्ता को प्रदर्शित करता है। जैसे 'सत्कर्म', सत्द्रव्य, सत्-गुण अर्थात् वर्तमान कालवाँची शब्द का अन्वय सबके साथ रहता है।

प्रश्न–अभाव कितने प्रकार के होते हैं?

उत्तर–अभाव पाँच प्रकार के होते हैं।

(1) प्रागभाव :– क्रिया और गुण के विशेष निमित्त के अभाव से प्राक् अर्थात् पूर्व न था। जैसे घट, वस्त्र आदि उत्पत्ति के पूर्व नहीं थे।

CamScanner से स्कैन किया गया

(2) प्रध्वंसाभाव :– जो होके न रहे, जैसे घट उत्पन्न होकर नष्ट हो जाये यह प्रध्यसाभाव कहलाता है।

(3) अन्योन्याभाव :- जो होवे और ना होवे अर्थात् गाय घोड़ा नहीं है या घोड़ा गाय नहीं है अर्थात् गाय में घोड़े का और घोड़े में गाय का अभाव है।

(4 अत्यन्ताभाव :– जिसका वैसा होना सम्भव नहीं है जैसे मनुष्य के सींग, आकाश का फूल, 'बन्ध्यापुत्र' अर्थात् बन्ध्या का पुत्र आदि।

5 संसर्गाभाव :- घर में घड़ा नहीं है अर्थात् घड़ा तो है पर घर में न होकर अन्यत्र कहीं है। अर्थात् इस समय घर के साथ घड़े का सम्बन्ध नहीं है।

प्रश्न–विद्या और अविद्या किसे कहते हैं ?

उत्तर–यथार्थ ज्ञान को विद्या कहते हैं। इसके विपरीत दुष्ट अर्थात् विपरीत ज्ञान को अविद्या कहते हैं। इन्द्रियों और संस्कार के दोष से अविद्या उत्पन्न होती है।

वात् पित्त आदि शरीर के धातुओं के विकृत होने से इन्द्रियों के द्वारा अपने विषय को ग्रहण करने की क्षमता में दुर्बलता आ जाना इन्द्रिय दोष है इस कारण कुछ का कुछ ज्ञान हो जाता है। यही मिथ्या ज्ञान या विपर्य ज्ञान है। संस्कार दोष से मिथ्या ज्ञान उस अवस्था में होता है, जब अनुभव भ्रान्त हुआ हो और उससे मष्तिष्क पर भ्रान्त संस्कार हो जाएँ। इस कारण जो स्मृति में ज्ञान होगा वह मिथ्या होगा। जो वस्तु जैसी नहीं उसका वैसा दीखना अविद्या है।

प्रश्न–नित्य और अनित्य किसे कहते हैं ?

CamScanner से स्कैन किया गया

उत्तर-जो विद्यमान हो और जिसका कारण कोई भी ना हो वह नित्य है। अर्थात् कारणरूप पृथिव्यादि नित्य द्रव्यों में गन्धादि गुण हैं वह नित्य है।

जो कारण वाले कार्यरूप गुण हैं वे अनित्य कहाते हैं। अर्थात् कार्यरूप पृथिव्यादि पदार्थ और उनमें रूप, रस, गन्ध, स्पर्श गुण हैं ये सब द्रव्यों के अनित्य होने से अनित्य हैं।

जो वस्तु अनेक अवयवों से मिलकर बनी है वह सावयव और अनित्य है। अवयवों को तोड़ते चले जाने पर अतिम अवस्था जबकि उसका और अधिक विभाजन न हो सके परमाणु कहलाता है वह नित्य है। यह समस्त जगत् का मूल कारण है।

प्रश्न–समवायि संयोगि, एकार्थ समवायि और विरोधी लिङ्ग को स्पष्ट करें।

उत्तर–जैसे आकाश परिमाण वाला है समवायि कहलायेगा। शरीर त्वचा वाला है सयोगि कहलायेगा क्योंकि यह नित्य सयोग है। एक अर्थ में दो का रहना जैसे कार्यरूप, स्पश कार्य का जानने वाला हैं यह एकार्थ समवायि कहलायेगा तथा विरोधी जैसे हुई वृष्टि होने वाली वृष्टि का विरोधी लिङ्ग है।

प्रश्न–व्याप्ति किसे कहते हैं?

उत्तर–व्यवस्था पूर्वक धर्मों का इकट्ठा रहना व्याप्ति है। चाहे वह दोनों धर्मों का हो अथवा दोनों में किसी एक का। धूम अग्नि बिना सम्भव नहीं इसलिये धूम की अग्नि के साथ व्याप्ति है परन्तु अग्नि धूम के बिना भी अंगार आदि में रहता है इसलिये अग्नि की व्याप्ति धूम के साथ नहीं बनती।

प्रश्न–छह दर्शनों के नाम लिखो? तथा इनमें क्या व्याख्या की गई है?

CamScanner से स्कैन किया गया

उत्तर– (1) पूर्वमीमांसा :– सृष्टि का कर्म कारण है उसको व्याख्या

(2) वैशेषिक :– समय की व्याख्या

(3) न्याय :– उपादान की व्याख्या

(4) योग :– पुरुषार्थ की व्याख्या

(5) सांख्य :– तत्वों के अनुक्रम से परिगणन की व्याख्या

(6) वेदान्त :– निमित्त कारण जो परमेश्वर है उसको व्याख्या

प्रश्न–चारों वेदों के नाम लिखिये ?

उत्तर–वेद ईश्वर कृत हैं और ये हैं :–

(1) ऋग्वेद (2) यजुर्वेद (3) सामवेद और (4) अथर्ववेद

प्रश्न–उपवेद कौन-कौन से हैं ?

उत्तर– आयुर्वेद, धनुर्वेद, गन्धर्ववेद और अर्थवेद ये चार उपवेद हैं।

प्रश्न–ब्राह्मण ग्रन्थ कितने हैं लिखो ?

उत्तर–ऐतरेय, शतपथ, साम और गोपथ ये चार ब्राह्मण ग्रन्थ हैं।

प्रश्न–वेदाङ्ग कितने हैं नाम लिखो ?

उत्तर–शिक्षा, कल्प, व्याकरण, निघण्टु (निरुक्त) छन्द और ज्योतिष ये छह वेदाङ्ग कहलाते हैं।

प्रश्न–वेदों में तथा ब्राह्मण ग्रन्थों, वेदाङ्गों, उपवेदों, शास्त्रों में क्या अन्तर है ?

CamScanner से स्कैन किया गया

उत्तर–वेद ईश्वर कृत तथा स्वत: प्रमाण हैं। अर्थात् वेदों को वेदों द्वारा ही प्रमाणित किया जाता है। जबकि अन्य शास्त्र ऋषियों मुनियों द्वारा बनाये गये हैं, जो परत: प्रमाण हैं। इनका प्रमाण होना वेदाधीन है।

प्रश्न–त्याज्य ग्रन्थों से क्या सत्य ग्रहण नहीं करना चाहिये ? अथवा त्याज्य ग्रन्थों से सत्य ग्रहण करना अनुचित है ?

उत्तर–जो जो उनमें सत्य है वह सब वेदादि शास्त्रों में है या वेदादि शास्त्रों का है और मिथ्या उनके स्वयं के घर का। वेदादि सत्य शास्त्रों के स्वीकार करने में सब सत्य का ग्रहण हो जाता है। असत्य से युक्त ग्रन्थस्थ सत्य को भी वैसे ही छोड़ देना चाहिये जैसे विषयुक्त अन्न को छोड़ देते हैं। वेदों में करने और छोड़ने की शिक्षा यथावत् दी है अत: हम केवल वेदों को ही मानते हैं।

प्रश्न–क्या स्त्रियों और शूद्रों को भी वेद पढ़ना चाहिये ?

उत्तर–हाँ ! ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य, शूद्र और अपने भृत्य, वा स्त्रियादि और अति शूद्रादि के लिये भी वेदों को पढ़ने का अधिकार है।

प्रश्न–संसार में सर्वोत्तम दान कौन सा है ?

उत्तर–संसार में जितने दान हैं अर्थात् जल, अन्न, गौ, पृथिवी, वस्त्र, तिल, सुवर्ण और घृत आदि से वेद विद्या का दान अतिश्रेष्ठ (सर्वोत्तम) है।

जिस देश में यथायोग्य ब्रह्मचर्य, विद्या और वेदोक्त धर्म का प्रचार होता है वही देश सौभाग्यवान् होता है।

CamScanner से स्कैन किया गया

प्रश्न–पत्र

सत्यार्थ-सुधा १९९२

समय–$1\frac{1}{2}$ घण्टा पूर्णाङ्क-100

नोट–सभी प्रश्न करने अनिवार्य हैं। प्रत्येक प्रश्न के अंक उसके सामने लिखे हैं।

प्रश्न 1. नीचे कुछ परिभाषाएँ दी गई हैं उनमें सही को सही लिखें तथा गलत को गलत लिखें। 6

(1) जब गुरु का प्राणान्त हो तब मृतक शरीर को भूत कहते हैं।

(2) मृतक शरीर का दाह करने वाले को प्रेताहार कहते हैं।

(3) जो उत्पन्न तो हुआ परन्तु अब नहीं है उसे प्रेत कहते हैं।

(4) किसी के किये हुए उपकार को न मानना 'कृतज्ञता' कहलाती है।

(5) ज्योतिष शास्त्र में गणित विद्या के साथ-साथ फल की लीला भी झूँठी है।

(6) सूर्य ग्रह ताप और प्रकाश देता है तथ पृथ्वी की तरह जड़ है।

प्रश्न 2. सन्तानों के उत्तम आभूषण क्या हैं ? 5

प्रश्न 3 गायत्री मन्त्र लिखो। 5

प्रश्न 4. सही परिभाषाओं को उनके सामने लिखो। 10

(1) वैर त्यागना	(1) ब्रह्मचर्य
(2) सत्य मानना, सत्य बोलना और सत्य ही करना	(2) अपरिग्रह
(3) मन, वचन, कर्म से चोरी त्याग	(3) शौच
(4) इन्द्रियों का संयम	(4) सत्य
(5) अत्यन्त लोलुपता का त्याग	(5) ईश्वर प्रणिधान
(6) स्नान आदि से पवित्रता	(6) सन्तोष

CamScanner से स्कैन किया गया

(7) पुरुषार्थपूर्वक जो प्राप्त हो उसमें प्रसन्न रहना (7) अहिंसा।

(8) कष्ट सहन करने पर भी धर्मयुक्त कर्मों का अनुष्ठान (8) अस्तेय

(9) सत्य साहित्य का पठन-पाठन (9) तप

(10) ईश्वर की भक्ति विशेष करना (10) स्वाध्याय

प्रश्न 5. अभिवादन से किन चार गुणों की वृद्धि होती है? 4

प्रश्न 6. नौ द्रव्यों में से किन्हीं चार के नाम लिखो? 4

प्रश्न 7. सही परिभाषाओं को उनके सामने लिखो। 10

1. जिसमें राग, द्वेष, प्रयत्न, सुख, दुःख, ज्ञान आदि हों वह है 1. बुद्धि
2. जिसमें एक काल में दो पदार्थों का ज्ञान नहीं होता वह है 2. शिक्षक
3. जो कानों से सुना जाता हो, बुद्धि से ग्रहण किया जाता हो, जिसका स्थान आकाश हो वह है 3. जीवात्मा
4. जिससे अच्छे, बुरे का ज्ञान होता हो वह है 4. स्पर्श
5. त्वचा से जिसका ग्रहण हो वह है 5. गुरुत्व
6. भारीपन कहलाता है 6. वेद
7. पूर्ण विद्यायुक्त धार्मिक विद्वान् कहलाता है 7. देवयज्ञ
8. जो ईश्वरकृत तथा स्वतः प्रमाण हैं वे हैं 8. ब्रह्मयज्ञ
9. सन्ध्योपासना एवं स्वाध्याय कहलाता है 9. शब्द
10. अग्निहोत्र को कहते हैं। 10. मन

CamScanner से स्कैन किया गया

प्रश्न 8. आर्य समाज का दूसरा या नवाँ कोई भी एक नियम लिखो ? 5

प्रश्न 9. जिस दर्शन में जो व्याख्या लिखी गई है उनके सामने लिखो 6

1. सृष्टि का जो कर्म कारण है उसकी व्याख्या	1. वेदान्त दर्शन में
2. समय की व्याख्या जिसमें हो	2. साँख्य दर्शन में
3. पुरुषार्थ की व्याख्या जिसमें हो	3. न्याय दर्शन में
4. उपादान की व्याख्या जिसमें हो	4. वैशेशिक दर्शन में
5. तत्वों के अनुक्रम से परिगणन की व्याख्या	5. योग दर्शन में
6. निमित्तकारण परमेश्वर की व्याख्या	6. मीमांसा दर्शन में

प्रश्न 10. आयु के हिसाब मे बालक के शिक्षक कौन-कौन से हैं ? 3

प्रश्न 11. कौन किससे पवित्र होता है ? 5

1. स्वर्ण	1. जल से
2. मन और इन्द्रियों के दोष	2. अग्नि से
3. जीवात्मा	3. प्राणायाम से
4. बुद्धि	4. तप से
5. शरीर	5. विवेक से

प्रश्न 12. नीचे पाँच स्वाभाविक गुण दिये हैं। प्रत्येक स्वाभाविक गुण एक इन्द्रिय तथा एक द्रव्य का है उन्हें छाँटकर लिखो। 5

स्वाभाविक गुण	इन्द्रियों तथा द्रव्यों के नाम
1. गन्ध	आँख [चक्षु], जिव्हा, त्वचा, श्रोत
2. रूप	[कान], नासिका, जल, वायु,
3. रस	आकाश, तेज [अग्नि], पृथ्वी
4. शब्द	
5. स्पर्श	

CamScanner से स्कैन किया गया

आर्य समाज के दस नियम

1- सब सत्य विद्या और जो पदार्थ विद्या से जाने जाते हैं, उन सबका आदिमूल परमेश्वर है।

2- ईश्वर सच्चिदानन्दस्वरुप, निराकार, सर्वशक्तिमान, न्यायकारी, दयालु, अजन्मा, अनन्त, निर्विकार, अनादि, अनुपम, सर्वाधार, सर्वेश्वर, सर्वव्यापक, सर्वान्तर्यामी, अजर, अमर, अभय, नित्य, पवित्र और सृष्टिकर्त्ता है। उसी की उपासना करनी योग्य है।

3- वेद सब सत्यविद्याओं का पुस्तक है। वेद का पढ़ना–पढ़ाना और सुनना-सुनाना सब आर्यों का परम धर्म है।

4- सत्य के ग्रहण करने और असत्य को त्यागने में सर्वदा उद्यत रहना चाहिए।

5- सब काम धर्मानुसार अर्थात् सत्य और असत्य को विचार कर करने चाहिए।

6- संसार का उपकार करना आर्यसमाज का मुख्य उद्देश्य है अर्थात् शारीरिक, आत्मिक और सामाजिक उन्नति करना।

7- सबसे प्रीतिपूर्वक धर्मानुसार यथायोग्य वर्तना चाहिए।

8- अविद्या का नाश और विद्या की वृद्धि करनी चाहिए।

9- प्रत्येक को अपनी ही उन्नति से संतुष्ट न रहना चाहिए, किन्तु सबकी उन्नति में अपनी उन्नति समझनी चाहिए।

10- सब मनुष्यों को सामाजिक सर्व हितकारी नियम पालने में परतन्त्र रहना चाहिए और प्रत्येक हितकारी नियम में सब स्वतन्त्र रहें।

मुद्रक : एस० के० प्रिन्टर्स, गोपी हलवाई के ऊपर, डैम्परोड हिण्डौन

CamScanner से स्कैन किया गया

पूज्या माता नवलियादेवीजी

धर्मपत्नि

स्व० सेठ घूड़मलजी आर्य

हिण्डौन सिटी

की पुण्य स्मृति में पुस्तक प्रकाशनार्थ ५०१ रुपये सादर भेंट।

भेंटकर्त्ता—
प्रह्लादकुमार आर्य (पुत्र)
प्रभाकरदेव आर्य (पौत्र)
प्रशान्तकुमार आर्य (प्रपौत्र)
प्रवीणकुमार आर्य ,,

ई वैदिक पुस्तकालय मुम्बई
सम्पर्क : 9029421718
पीडीएफ : आचार्य धर्मधर आर्य

पूज्या माता कंचनदेवीजी आर्या

धर्मपत्नि

स्व० श्री शान्तिस्वरूपजी आर्य पंसारी

भेंटकर्त्ता—
सत्यदेव आर्य (पुत्र)
ब्रह्मदेव आर्य ,,
अरुणकुमार आर्य (पौत्र)
आशीषकुमार आर्य ,,
अनुरागकुमार आर्य ,,
नवनीतकुमार आर्य ,,

पुस्तक प्रकाशन हेतु ५०१ रुपये सादर भेंट।

CamScanner से स्कैन किया गया